 ISSN (P) : 0976-7444
(e) : 2395-7247

यूरोपियन प्रवेशकाल में शास्त्रीय संगीत का अध्ययन पंजाब के विशेष संदर्भ में

11

डॉ. पुष्पा चौहान*

यूरोपियन प्रवेशकाल की परिस्थितियों को जानने के लिए हमें शास्त्रीय संगीत के विभिन्न कालो का अध्ययन करना उचित है। प्राचीन काल से ब्रिटिशकाल तक शास्त्रीय संगीत का विकास क्रम क्या था तथा उस युग में शास्त्रीय संगीत की क्या स्थिति थी तथा संगीत को जीवित रखने के लिए किन–2 पक्षों ने योगदान दिया। भारत सरकार ने संगीत कला के विकास में क्या महान योगदान दिया है। सन् 1952 में संगीत कला को प्रोत्साहन देने हेतु कुशल संगीतज्ञों को राष्ट्रपति पदक प्रदान करना प्रारंभ किया। 1953 में 'संगीत नाटक अकादमी' तथा 1954 में 'ललित कला अकादमी' की स्थापना की। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये। ख्याति प्राप्त वृद्ध संगीतज्ञों को मान–पत्रा भेंट किये जाने लगे। 'संगीत' तथा 'संगीत कला विहार' संगीत पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। श्रेष्ठ संगीतज्ञों को विदेश में अपनी कला प्रदर्शन हेतु जाने की सुविधाएं प्रदान की गई। आज प्रारम्भ से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो चुका है। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत के अन्तर्गत भजन, गज़ल, गीत आदि के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।यह जानने की उत्सुकता हमेशा मेरे मन में होती थी और मैं चिन्तन करती रहती थी इसलिए मैनें अपने शोद्य का विषय यूरोपियन प्रवेशकाल में शास्त्रीय संगीत का अध्ययन पंजाब के विशेष संदर्भ मे में रख लिया।

किसी भी युग की सभ्यता एवं संस्कृति के उत्कर्ष का अनुमान उस युग में संगीत की समृद्धि से लगाया जा सकता है। संगीत मनुष्य के जीवन के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है फिर चाहे वह लोक संगीत हो या शास्त्रीय संगीत। यह मनुष्य के हृदय की गहन अनुभूतियों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। किसी भी ललित कला का मूल उद्देश्य सौन्दर्य की सृष्टि कर भोक्ता को परमानन्दलीन कर देना होता है। संगीत यही भूमिका अदा करता है। गायन, वादन और नर्तन इन तीनों का समन्वित रूप संगीत कहलाता है। शास्त्रीय संगीत से अभिप्राय उस संगीत से है जिसे समझने के लिए शास्त्रों को समझना आवश्यक है। शास्त्रों का अर्थ मार्ग दिखाने वाला होता है। लेकिन शास्त्रीय शब्द से अर्थ उस शास्त्रा से है जिसे पढ़कर, समझकर, उस पर अमल करते हैं। नियमों व शास्त्रों के अनुसार गाये जाने वाला संगीत अथवा जो स्वर, लय, ताल आदि नियमों में बाँधकर आकर्षक रिति से गाया व बजाया जाता है

**फेकल्टी, संगीत विभाग, पीजीजीसीजी, सैक0 11, चंडीगढ़*

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

व शास्त्रीय संगीत कहलाता है। शास्त्रीय संगीत का एक नियमित शास्त्रा होता है तथा उसी शास्त्रानुसार उसका गायन व वादन होता है। शास्त्रीयता से अभिप्राय यह लगाया जाता है कि ऐसा संगीत जो शास्त्रीय विधि निषेधें का आंख बन्द करके प्रयोग करें अतः शास्त्रीय संगीत में शास्त्रों आदि के नियम और बन्धनों का निर्वाह अनिवार्य होता है।

शास्त्रीय संगीत की परिभाषा :

शास्त्रीय से अर्थ वेद विहित, शास्त्रानुमोदित, शास्त्रों, परम्परानुसार, वैज्ञानिक आदि से है एवं संगीत से अर्थ गायन या मधुर गायन विशेषतः उस गायन से है जो नृत्य और वाद्य यन्त्रों के साथ गया जाता है।

वृहत्‌हिन्दी पर्यायवाची शब्द कोषानुसार शास्त्रीय का अर्थ शास्त्रोक्त या शास्त्रानुकूल बताया गया है और संगीत से अर्थ गीत, गान, गाना, गेय आदि से है।

मंतग ने शास्त्रीय संगीत को निवद्व संगीत कहा है अर्थात् वह संगीत जो आलापादि नियमों से नियंत्रित रहता है। वह शास्त्रीय संगीत कहलाता है। वैदिक काल में संगीत के दुसरे स्वरूप अर्थात शास्त्रीय संगीत को साम भी कहा गया है क्योंकि साम का प्रयोग यज्ञ आदि में अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है और उसके बिना यज्ञ सम्पूर्ण नहीं समझा जाता था। साम को शास्त्रीय मानने का एक कारण यह भी है कि उसमें आधुनिक शास्त्रीय संगीत के सभी लक्षण घटित होते हुए दिखाई पड़ते हैं जो कि हमारे संगीत के लक्षण ग्रंथों में भी उल्लेखित हैं।

संगीत में गायन, वादन व नर्तन ये तीन भेद कहे गये हैं। ये सभी शास्त्रीय माने जाते हैं जब हम इनको नियमो में बांधकर प्रयोग करते हैं।

संगीत मूलतः प्रयोगात्मक कला होते हुए भी शास्त्रीय इसीलिए कही गई है क्योंकि यह निश्चित सिद्धांतों पर आधरित है। यह सिद्धांत ही शास्त्रा का निर्माण करते हैं।

शास्त्रीय संगत एक ऐसा संगीत है जो शास्त्रा की दृष्टि से पूर्णतः निदोष भी हो और आन्तरिक लोकरंजन की दृष्टि से भी प्रयाप्त सक्ष्म हो।

शास्त्रीय संगीत में परिवर्तन होना आवश्यक नहीं है क्योंकि आज का 'शास्त्रा' कल प्रसिद्ध न रहने से लोक बन सकता है और आज का 'लोक' कल नियमबद्ध होने से 'शास्त्रा' बन सकता है।

शास्त्रीय संगीत का प्रयोग सर्वप्रथम भारतीय शिष्यों के द्वारा किया गया ऐसा बृहद्‌दशी में उल्लिखित है। शास्त्रीय संगीत में शब्द की प्रधानता न होकर स्वर, लय की प्रधनता होती है इसलिए शब्दों को स्वर के अनुसार परिवर्तित कर लिया जाता है। शास्त्रीय संगीत विशिष्ट प्रशिक्षण के द्वारा गुरू परम्परा से ही प्राप्त किया जा सकता है।

शास्त्रीय संगीत के दो पक्ष बताए गये हैं : शास्त्रीय पक्ष क्रिया पक्ष

यूरोपीय भारतीय संगीत को पसन्द नहीं करते थे और न उन्होंने कभी इसको समझने का ही प्रयास किया। यूरोपीयनों की दृष्टि में भारतीय संगीत महज एक शोरगुल एवं अकलात्मक वातावरण से पूर्ण था। ये भारतीय संगीत को असभ्यों का संगीत समझते थे। उन्हें भारतीय संगीत

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

में कोई भी विशेषता, कोई भी कलात्मकता नहीं दिखाई दी इसीलिए वे भारतीय संगीत की उपेक्षा करते रहे और न उन्होंने कभी अपने शासनकाल में भारतीय कलाकारों को प्रोत्साहन किया। वे उन्हे तुच्छ एवं दयनीय समझते थे। वे अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता के सामने भारतीय संस्कृति को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस उपेक्षा से भारतीय संगीत का विकास इस काल मे अवरूद्ध नहीं हुआ, हां उसके विकास क्रम में थोड़ा प्रभाव अवश्य पड़ा, लेकिन वह निरन्तर गतिपूर्ण रहा।

यूरोपियन प्रवेश काल सन् 1600 ई॰ से 1700 ई॰ तक रहा तथा 1701 ई॰ से 1850 ई॰ तक अंग्रेजी कम्पनियों का राज्य रहा जिसे हम कम्पनी राज्य कहते हैं। 1850 ई॰ से 1947 ई॰ तक अंग्रेजी शासनकाल रहा। अध्ययन की सुविधा एवं विषय की सरलता के लिए इसको तीन भागों में बांटा गया है :

प्रथम भाग 1600 ई॰ से 1700 ई॰ तक प्रवेशकाल

द्वितीय भाग 1701 ई॰ से 1850 ई॰ तक कम्पनी राज्य

तष्तीय भाग 1850 ई॰ से 1947 ई॰ तक अंग्रेजीशासन काल व ब्रिटिशकाल

कम्पनी राज्य का प्रवेष काल 1701 ई॰ से 1850 ई॰ तक माना गया है।

यूरोपियन प्रवेशकाल में संगीत 1600 ई॰ से 1700 ई॰

The history of British India started when in 1600 the East India Company Secured for itself a monopoly of Trade With the East under a Charter from Elizabeth-I but the foundation of British Rule in India was laid in 1757, when East India Company defeated Saurajudaula at the battle of Plassay and it took another 100 years before the Govt., Territory and it took another 100 years before in govt. territory and recebues of India were transfer from The Company to British Crown.

प्रस्तुत शोद्य का विषय अंग्रेजी शासनकाल व ब्रिटिशकाल 1850 ई॰ से 1947 ई॰ तक सीमित है परन्तु अंग्रेजों का भारतीय संगीत के प्रति क्या दृष्टिकोण था यह जानने के लिए यूरोपीय जातियों के प्रवेशकाल से ही अध्ययन करना उचित है।

कम्पनी राज्य का प्रवेश काल 1701 ई॰ से 1850 ई॰ तक

औरंगजेब की मृत्यु सन 1707 ई. में हुई, उसके उपरान्त 1857 तक औरगंजेब के दस उतराधिकारियों ने दिल्ली में शासन किया। इस काल में यद्यपि संगीत का प्रचलन रहा परन्तु उसकी उन्नति न के बराबर थी। अठाहरवीं शताब्दी के उतरार्ध में मुसलमानों की शक्ति का ह्मास हुआ और देश अंग्रेजों के अधिकार में क्रमशः आने लगा। परन्तु 19वीं शताब्दी के मध्य तक भारत में अंग्रेजी राज्य पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था।

ब्रिटिशकाल में संगीत 1850 ई॰ –1947 ई॰

अंग्रेजों के पांव तो भारत की पवित्रा भूमि पर मुगलकाल में ही पड़ चुके थे, 18वीं शताब्दी के आरम्भ में उन्होंने भारत के कुछ भागों पर अपना अधिपत्य भी स्थापित कर लिया। मुगलशासन के सूर्य के अस्त होने के साथ–2 ब्रिटिश राज्य का अभ्युदय आरम्भ हुआ। इस काल

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues. JAB

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

में भारत अनेक छोटी–2 रियासतों में बंट चुका था। लगभग 1600 ई० से 1947 ई० तक भारत में अंग्रेजों का शासन रहा। अंग्रेज शासक भारतीय सभ्यता को हेय दृष्टि से देखते थे। वह भारतीय संगीत की आत्मा को न समझने के कारण उसके प्रति सदैव उदासीन रहे।

To Europeans it is certainly the best know of all Indian arts, almost every Traveller in India comes away with the idea that the music of the Country consists of more noice and nosel drawling of the most of epulsive kind often accompanied by Contaration and gestures of the most, ludicrous description. Capt. Day.

यूरोप निवासियों के लिए यह (संगीत) भारतीय कलाओं में सबसे अधिक जानी हुई है। अंग्रेजों के उपनिवेश कायम होने के साथ ही साथ पूर्वी और पश्चिमी तट पर अनेक स्थानों पर पुर्तगाल और फ्रांस के उपनिवेश भी कायम हुए किन्तु इन सभी यूरोप निवासियों की दृष्टि में भारतीय संगीत एक शोर के अतिरिक्त कुछ न था। उन्हें भारतीय संगीत में कोई भी विशेषता या कलात्मकता दिखाई न दी, वे निरन्तर इसकी उपेक्षा करते रहे। उनके शासन काल में भारतीय कलाकारों को प्रोत्साहन या सम्मान नहीं मिला। भारत पर शासन करना ही अंग्रेजो का मुख्य उद्देश्य था, कला अथवा संस्कृति स्थापित करने से उनका कोई प्रयोजन न था इसके विपरित अंग्रेजी सभ्यता का प्रभाव भारतीय शासकों एवं जनता पर पड़ने लगा।

भारतीय रियासतों के शासक विशेष अवसरों पर अंग्रेज उच्चाधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए अंग्रेजी संगीत और नृत्य का ही आयोजन करते थे। पंजाब की रियासतों के शासक भी देश के अन्य शासकों की भांति विदेशों में आने–जाने लगे और अंग्रेजों के नृत्य संगीत में रूचि लेने लगे। पटियाला तथा फरीदकोट की रियासतों में अंग्रेजी बैण्ड वादकों के दल गठित किए गए जिनमें प्रत्येक में प्रायः पचास कलाकार थे। दूसरी रियासतें भी इन प्रभाव से अछूती न रही। भारतीय शासक निश्चिय ही अंग्रेजों के कृपा–पात्रा बनने के लिए ही ऐसा करते थे, परन्तु फिर भी उनमें भारतीय संस्कारों का नितान्त आलोप नहीं हो पाया था। विशेष उत्सवों पर वह भारतीय संगीत का ही दरबार आयोजित करते थे क्योंकि जनता की आत्मा का संबंध भारतीय संगीत से ही था और भारतीय शासक भी अपनी सहज जन्मजात प्रवृत्ति को बदलने में असमर्थ थे। ब्रिटिशकाल में संगीतकारों में एक निष्कृष्ट प्रथा प्रारम्भ हो गई थी, वह प्रथा थी "घरानो" की, हालांकि इन घरानों की बुनियाद राजपूत काल में पड़ चुकी थी, लेकिन वह ब्रिटिशकाल में उभर आई थी। कई घरानेदार संगीतकार राज्याश्रय में रहते हुए निरन्तर संगीत साधना में जुटे रहे, अन्य बहुतो को समय–2 पर दरबारों और संगीत सभाओं में पारिश्रमिक इनाम–इकराम और प्रतिष्ठा मिलती रही। भारतीय शासक कला को प्रोत्साहित करने के लिए प्रायः संगीतकारों को सम्मान, उपाधियां भी प्रदान करते और कला प्रेमी शासक स्वयं भी उनसे संगीत शिक्षा ग्रहण करते थे। पंजाब के राजाओं में पटियाला दरबार का इस दिशा में अधिक योगदान रहा है। शिमला की पहाड़ी रियासतों में राणा 'कोटी' ठियोग, सुजानपुरटीहरा, नादौन आदि रियासतों के राजा, राणा आदि संगीत प्रेमी थे। महाराजा हरिसिंह शास्त्रीय संगीत में अत्यधिक रूचि रखते थे। उनके सुपुत्र युवराज करण सिंह भी शास्त्रीय संगीत के बड़े मर्मज्ञ तथा प्रेमी थे।

© 2015 *Journal Anu Books.* Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

भारत की अन्य रियासतों में भी शास्त्रीय संगीत पुष्पित, पल्लवित हुआ – इन्दौर, बड़ौदा, ग्वालियर, बनारस, इलाहाबाद, जयपुर, हैदराबाद, रामपुर, अलवर, टोंक, भालावाड़, जोधपुर, कोल्हापुर, मैसूर, बीकानेर, जूनागढ़ आदि के अतिरिक्त पंजाब में भी पटियाला, लाहौर, अमृतसर, सिंध आदि स्थानों पर शास्त्रीय संगीत की गोष्ठीयां आयोजित होती रहती थी। संगीतकारों को विशेष अवसरों पर रियासतों के शासक आमंत्रित करते और उनकी कला पर प्रसन्न होकर पारितोषिक प्रदान करते थे। अनेक संगीतकार दरबारों में प्रतिश्ठा के साथ गायक–वादक के रूप में नियुक्त थे और उन्हें सभी सुविधायें प्राप्त थी। अनेक भारतीय राजाओं ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की मर्यादा की रक्षा की लेकिन अंग्रेजों को इसमें कोई रूचि न थी। कुछ इस भावना के कारण भी वे उदासीन रहे कि यह उनकी गुलाम प्रजा की कला थी, और इसे समझने की चेष्ठा करना अथवा उसमें रूचि लेना उनकी शासकीय मर्यादा के विरूद्ध था। भारतीय उनकी दृष्टि में असभ्य थे।

कालान्तर में भारतीय राजाओं की संतानों को विदेश मे अंग्रेजी शिक्षा दी जाने लगी जिसके फलस्वरूप रियासतों के भावी शासक एवं राजकुमार जिनके द्वारा भारतीय संगीत के उत्थान की आशा थी, उनमें से अधिकांश नई पद्धति की अंग्रेजी शिक्षा पाकर भारतीय संगीत की पूर्णतया उपेक्षा करने लगे।

सुप्रसिद्ध विद्वान विष्णुनारायण भातखण्डे अपने ग्रंथ–शार्ट हिस्टोरिकल सर्वे आफ हिन्दोस्तानी म्यूजिक– में लिखते हैं – ब्रिटिशकाल में भारतीय संगीत को कोई विशेष आश्रय नहीं मिला, जिसके फलस्वरूप उसके गुण और परिणाम में निश्चित कमी हो गई। भारतीय संगीत की अवस्था इस काल के पूर्वार्द्ध में शोचनीय स्थिति पर पहुंच चुकी थी।

संगीत को राजाश्रय प्राप्त न होने के कारण तथा आम जनता के यूरोपीयन सभ्यता में रंग जाने के कारण भी भारतीय संगीत को उपेक्षा होने लगी थी। इसलिए संगीत ऐसे व्यक्तियों के हाथों में पंहुच गया जो समाज में घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। संगीतज्ञ समाज में घृणा की दृष्टि से देखे जाने लगे और योग्य, प्रतिभाशाली उच्चकोटि के लोग संगीत शिक्षा प्राप्त करने से घबराने लगे क्योंकि व्यवसायियों ने संगीत को उज्जवल तथा पवित्रा रूप को विकृत कर दिया था ऐसी स्थिति होने पर भी उच्चकोटि के संगीतकारों ने इसे अपनी साधना का लक्ष्य बनाए रखा।

इस काल में घराने उभरने के कारण अनेक संगीतकार शिक्षा देने से पूर्व एवं मरते समय तक अपने शिष्यों को ताकीद करते थे कि संगीत ज्ञान को जो उसे प्रदान हुआ है, अपने तक ही सीमित रखें किसी भी दशा में इस अमूल्य ज्ञान को दूसरों को न देना, अगर तुमने दिया तो तुम महा पाप के भागी बनोगे । इस प्रकार का वे उपदेश दिया करते थे और अशिक्षित अथवा शिक्षित समुदाय भी उन्हीं उपदेशों को वेद वाक्य समझकर पालन करते चले गए। इससे आप कल्पना कर सकते हैं कि घरानों की उत्पति संगीत विकास के ख्याल से नहीं हुई बल्कि इसकी पृष्ठभूमि में कलाकार की संकीर्णता, उसकी स्वार्थता एवं उसकी बुद्धिहीनता भरी हुई थी।

1850 ई॰ के पश्चात ब्रिटिश शासनकाल में संगीत का विकास न होकर ह्यास ही हुआ।

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

संगीत समाज के ऐसे व्यक्तियों के हाथों में पहुंच गया, जो समाज में हीन दृष्टि से देखे जाते थे। शिक्षा प्राप्त प्रतिभाशाली तथा कुलीन व्यक्ति प्रायः संगीत क्षेत्रा मे आने से घबराते थे। जो बालक संगीत की ओर झुकाव रखता उसके अभिभावक अधिकतर उसे हतोत्साहित करते और सगे सम्बन्धी उसका मजाक उड़ाते।

वेश्याओं का संगीत कला पर व्यावसायिक रूप से अधिपत्य हो चुका था। प्रायः प्रत्येक वर्ग के लोग वेश्याओं के गृहों पर संगीत द्वारा मनोरंजन हेतु जाते परन्तु संगीत शिक्षा प्राप्त करना अथवा अपनी संतान को संगीत की शिक्षा दिलवाना उन्हें कतई पसन्द न था। पंजाब के कई उच्च कोटि के उस्ताद इच्छा न होते हुए भी वेश्याओं को संगीत शिक्षा देते थे क्योंकि उन्हें शिष्ट वर्ग के शार्गिद नहीं मिलते थे और दूसरी ओर वेश्याओं को शिक्षा देने से उनकी जीविका की समस्या भी हल होती थी। भारतीय संगीत से प्रभावित सर विलियम जोन्स, कैप्टन डे आदि अंग्रेज विद्वानों ने इसे पुनः उभारने का प्रयास किया तथा पुस्तकें लिखी, जिसका समाज के शिक्षित वर्ग पर सुप्रभाव पड़ा और संगीत के प्रति अनादर का भाव कम होने लगा। इसी समय कुछ और भी ग्रन्थ लिखे गए जैसे संगीत सार, राग कल्पद्रुम, यूनिवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक आदि। 19वीं शताब्दी के मध्य में एक बार फिर वाजिद अली शाह के दरबार में संगीत का पुनः सम्मान हुआ। लखनऊ के गुलाम रजा साहब ने रजाखानी तथा मसीत खां ने मसीतखानी गत का आविष्कार करके सितार पर उसके वादन का प्रचार किया। वायलिन, हारमोनियम आदि वाद्यों व आरकेस्ट्रा का प्रचलन हुआ ।

19वीं शताब्दी के अन्त में लाहौर पंजाब का मुख्य केन्द्र बन गया था। जन साधरण के मनोरंजन का मुख्य साधन संगीत ही था लेकिन उसके एक मात्रा धरक पेशेवर लोग ही थे। रोजी रोटी से संबंधित होने के कारण तथा परस्पर स्पर्ध के कारण ये पेशेवर कठिन साधना द्वारा नेपुण्य प्राप्त करते थे। इन पेशेवरों में वेश्यायें, मीरासी, डोम, भाण्ड आदि वर्ग के लोग थे। ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल आदि शैलियां पंजाब में उन्नति पर थी। इसी समय संगीत की रक्षार्थ पं॰ विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पंडित विष्णुदिगम्बर पलुष्कर नामक दो महान संगीतज्ञों ने जन्म लिया।

पं॰ जी ने भक्ति रस के गीतों को संगीत के प्रचार के साधन के रूप में अपनाकर अश्लील शब्दों की बंदिशों का परित्याग किया। इसके परिणामस्वरूप आपके भक्तिमय गीत समाज में लोकप्रियता प्राप्त करने लगे। 5 मई 1901 को आपने लाहौर में गान्धर्व महाविद्यालय की स्थापना की। पंजाब में आपके अनेक शिष्य बन गए। आपने छोटी–2 अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की एवं सुप्रसिद्ध स्वरलिपियां तैयार की। संगीत बाल बोध लाहौर में प्रकाशित हुई थी। पंडित जी ने पंजाब में संगीत की काया ही पलट दी। संगीत का विकास बड़ी द्रुतगति से होने लगा। पंडित भातखण्डे जी ने भी संगीत के प्रचार व प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई रागों की बंदिशे बनाई और बंदिशों की एक नई शुरूआत की। यह नई परम्परा 'लक्ष्ण गीत' थी जिसमें राग का नाम एवं स्वरूप, आरोह, अवरोह तथा अन्य विशेषताएं दी गई थी। उन्होंने एक अत्यन्त ही सरल और सुबोध ताललिपि पद्धति का भी आविष्कार किया जो आज अत्यन्त लोकप्रिय है। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, विनायक राव पटवर्धन, नारायण राव व्यास आदि ने लाहौर में संगीत

© 2015 Joumal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

की साधना की और पंजाब से ही ख्याति अर्जित की।

पं॰ विष्णु दिगम्बर ने अनेक शिष्यों को शिक्षा देकर भिन्न–2 नगरों में संगीत विद्यालय चलाने के योग्य बना दिया। जालन्धर में इनके शिष्य नेत्रहीन मंगतराम ने संगीत–विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। पंजाब के ढक्कल खां, विलायत खां, काले खां, मच्छर खां, दिलीपचन्द वेदी, नज़ाकत अली, सलामत अली, बड़े गुलाम अली खां, मियां मलंग, माई नसीरा, अब्दुल अज़ीज़ाखां आदि कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर संगीत को लोकप्रिय बनाने में योगदान देते रहे हैं। इसी समय बंगाल के कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने स्वरचित गीतों को आकर्षिक स्वर समुदायों में ढालकर संगीत जगत के सम्मुख 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से रखा।

18वीं शताब्दी से संगीत विभिन्न घरानों की धरोहर बन गया था। संगीतजीवी उस्ताद केवल अपने पुत्रा, निकट सम्बन्धी अथवा प्रिय शिष्यों को ही संगीत शिक्षा देते थे । सामान्य लोगों के लिए संगीत सीखना कठिन था। दरबारी कलाकारों से सीखना और भी कठिन था। धीरे–2 लाहौर में अनेक गुणीजन बाहर से आकर स्थायी रूप में निवास करने लगे । दिल्ली घराना, ग्वालियर घराना, किराना घराना के गुणीजनों ने भी पंजाब की श्री वृद्धि की, संगीत के सुर राजा–महाराजा की सभाओं के अतिरिक्त सार्वजनिक स्थानों पर भी गूंजने लगे।

1942 ई॰ में पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर में संगीत को एक विषय के रूप में मान्यता प्रदान की गई। 15 अगस्त सन् 1947 के दिन भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। स्वाधीन भारत के उन्मुख पर्यावरण में संगीत का प्रसार देश में त्रीव गति से होने लगा। भारत सरकार ने संगीत कला के विकास में महान योगदान दिया है। सन् 1952 में संगीत कला को प्रोत्साहन देने हेतु कुशल संगीतज्ञों को राष्ट्रपति पदक प्रदान करना प्रारंभ किया। 1953 में 'संगीत नाटक अकादमी' तथा 1954 में 'ललित कला अकादमी' की स्थापना की। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये। ख्याति प्राप्त वृद्ध संगीतज्ञों को मान–पत्रा भेंट किये जाने लगे। 'संगीत' तथा 'संगीत कला विहार' संगीत पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। श्रेष्ठ संगीतज्ञों को विदेश में अपनी कला प्रदर्शन हेतु जाने की सुविधाएं प्रदान की गई। आज विभिन्न कालेजों, स्कूलों, संगीत संस्थाओं द्वारा संगीत एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो चुका है। अब संगीत किसी राजा की रूचि अथवा विदेशी शासन की कृपा का याचक नहीं रहा। भारतीय संगीत जन समाज में दिन–प्रतिदिन नए उन्मेश के साथ पथ पर अग्रसर हो रहा है।

सन्दर्भ सूची

- *डा॰ पंकज माला शर्मा, सामगान : उदभव, व्यवहार एवं सिद्धान्त, 1996, पृ॰ 4 से 6*
- *किरण बाला–मध्ययुग में संगीतशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ, अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध 1990–91, पृ॰2*
- *प्रो॰ इन्द्राणी चक्रवर्ती, संगीत मजुषा, 1988, पृ॰5–7*
- *प्रो॰ सत्यदेव शर्मा, संगीतूशा, पृ॰ 1*
- *पंडित औंकारनाथ ठाकुर, संगीताजंली, पृ॰ 5*
- *डा॰ संगीता गौरंग, UGC- SET/NET, पृ॰–112*

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

- डा॰ मंजु, शास्त्रीय संगीत तथा उपशास्त्रीय संगीत एवं श्रोतागण, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध 1990,
- संगीत पत्रिका, जुलाई 1963, पृ॰ 34
- डा॰ लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत, 1978, पृ॰86
- उमरेशचन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली, 1988, पृ॰171

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.